

खण्ड—1

अधिगम और शिक्षा

इकाई—1 अधिगम की अवधारणा

रूपरेखा :—

- 1.1 प्रस्तावना
- 1.2 उद्देश्य
- 1.3 सीखने का अर्थ
- 1.4 सीखने की परिभाषा
- 1.5 अधिगम की प्रकृति
- 1.6 मनोवृत्ति
 - 1.6.1 मनोवृत्ति की परिभाषा
 - 1.6.2 मनोवृत्ति की प्रकार
 - 1.6.3 मनोवृत्ति की प्रकृति
 - 1.6.4 शिक्षक की भूमिका
- 1.7 अधिगम को प्रभावित करने वाले कारक
 - 1.7.1 शिक्षक से सम्बंधित कारक
 - 1.7.2 शिक्षार्थी से सम्बंधित कारक
 - 1.7.3 पाठ्य वस्तु से सम्बंधित कारक
 - 1.7.4 अधिगम व्यवस्था से सम्बंधित कारक
 - 1.7.5 वातावरण से सम्बंधित कारक
- 1.8 ईकाई सारांश
- 1.9 अपनी प्रगति की जाँच कीजिए
- 1.10 संदर्भ सूची

1.1 प्रस्तावना—

“सीखना व्यवहार में उत्तरोत्तर सामन्जस्य की प्रक्रिया है” चार्ल्स ई. स्कनर

सामान्य अर्थ में “सीखना” व्यवहार में परिवर्तन को कहा जाता है। परन्तु सभी तरह के व्यवहार में हुए परिवर्तन को सीखना नहीं कहा जाता है। व्यवहार में परिवर्तन थकान, दवा खाने से, बीमारी, परिपक्वता आदि से भी होता है। मनोविज्ञान में सीखने से तात्पर्य सिर्फ उन्ही परिवर्तनों से होता है जो अभ्यास या अनुभूति के फलरूप होते हैं। वास्तव में सीखना ही मनुष्यों और जानवरों में विभेद करता है। मनुष्य जन्म के बाद से ही सीखना आरम्भ कर देता है और जीवन भर कुछ न कुछ सीखता रहता है। सीखना व्यवहार में वैसे परिवर्तन को कहा जाता है जिसका उद्देश्य व्यक्ति को समायोजन करने में मदद करना होता है। इस प्रकार हमारा सम्पूर्ण जीवन ही सीखने का परिणाम है।

1.2 उद्देश्य

इस इकाई के अध्ययन के पश्चात् आप—

- सीखने के सामान्य अर्थ के बारे में जान सकेंगे।
- सीखने की परिभाषा को समझ सकेंगे।
- सीखने की प्रकृति के बारे में जान सकेंगे।
- सीखने को प्रभावित करने वाले कारकों के बारे में जान सकेंगे।
- सीखने को प्रभावित करने वाले कारकों में अभिवृत्ति का प्रभाव के बारे में जान सकेंगे।

1.3 सीखने का अर्थ

“वातावरण के प्रति उपयुक्त प्रतिक्रिया को अपनाने की प्रक्रिया को सीखना कहते हैं”।

उदाहरणार्थ— शिशु के सामने दीपक ले जाने पर वह स्वाभाविक रूप से उसकी लौ को पकड़ने के लिए हाथ बढ़ाता है किन्तु लौ हाथ में लगते ही उसे जलन का अनुभव होता है और वह हाथ खींच लेता है। पुनः जब कभी उसके सामने दीपक लाया जाता है तब वह अपने अनुभव के आधार पर अबकी बार लौ पकड़ने के लिए हाथ नहीं बढ़ाता है वरन् वह उससे दूर भागने का प्रयास करता है। इस प्रकार अनुभव के आधार पर उसके स्वाभाविक व्यवहार में परिवर्तन हो जाता है मनोविज्ञान में इस प्रकार के स्वाभाविक व्यवहार में होने प्रगतिशील परिवर्तन को ही सीखना कहते हैं।

1.4 सीखने की परिभाषा

- "सीखना एक ऐसी प्रक्रिया है जिसके द्वारा अनुभूति या अभ्यास के फलस्वरूप व्यवहार में अपेक्षाकृत स्थायी परिवर्तन होता है।" सारटैन, नार्थ, स्ट्रेज तथा चैपमैन
- मॉगनि किंग, विस्ज तथा स्कॉपलर "अभ्यास या अनुभूति के परिणामस्वरूप व्यवहार में होने वाले अपेक्षाकृत स्थायी परिवर्तन कहा जाता है।"
- बुडवर्थ "नवीन ज्ञान और नवीन प्रतिक्रियाओं को प्राप्त करने की प्रक्रिया सीखने की प्रक्रिया है।"
- गेट्स "अनुभव के द्वारा व्यवहार में रूपान्तर लाना ही सीखना है।"
- क्रो व क्रो " सीखना आदतों, ज्ञान और अभिवृत्तियों का अर्जन है।"
- ई.ए.पील. " सीखना व्यक्ति में एक परिवर्तन है जो उसके वातावरण के परिवर्तनों के अनुसरण में होता है।

ऊपर दी गई परिभाषाओं एवं अनेक अन्य मनोवैज्ञानिकों द्वारा दी गयी परिभाषाओं का यदि संयुक्त विश्लेषण किया जाए तो हम निम्नांकित निष्कर्ष पर पहुँचते हैं।

- सीखना व्यवहार में स्थायी परिवर्तन को कहा जाता है।
- व्यवहार में परिवर्तन अभ्यास या अनुभूति के फलस्वरूप होता है।
- व्यक्ति एवं वातावरण के बीच क्रिया-प्रतिक्रिया के फलस्वरूप अधिगम या सीखना होता है।

1.5 अधिगम की प्रकृति

1. अधिगम प्रक्रिया तथा परिणाम – इसके द्वारा व्यक्ति नये अनुभवों, व्यवहारों तथा तथ्यों प्रत्ययों तथा सिद्धान्तों को अर्जित करता है।
2. अधिगम मानव की एक प्रवृत्ति है।
3. अधिगम मानसिक क्षमताओं के विकास की एक प्रक्रिया है।
4. अधिगम सकारात्मक तथा नकारात्मक दोनों प्रकार की होती है।
5. अधिगम एक सतत् प्रक्रिया है।
6. अधिगम एक सामाजिक तथा मनोवैज्ञानिक प्रक्रिया है।
7. अधिगम एक विवेकपूर्ण क्रिया है।
8. अधिगम एक समायोजन की प्रक्रिया है।
9. अधिगम एक समस्या समाधान की प्रक्रिया है।
10. अधिगम का अपना एक रूप होता है।
11. अधिगम एक खोज की प्रक्रिया है।

12. अधिगम एक अभिवृद्धि की प्रक्रिया है।

अपनी प्रगति की जाँच

क्रिया अभ्यास

शिक्षण तथा अधिगम के सम्बन्ध पर एक निबंध लिखिए ?

1.6 अभिवृत्ति – मनोवृत्ति शब्द टैटिन भाषा के शब्द से उत्पन्न है इसका अर्थ है, योग्यता या सुविधा। अभिवृत्ति को अनुभव किया जाता है, इसका सम्बंध अनुकूल या प्रतिकूल प्रभाव से है। यह एक मानसिक दशा है जो सामाजिक व्यवहार की अभिव्यक्ति करने में विशेष भूमिका प्रस्तुत करती है।

अभिवृत्ति की परिभाषा –

अभिवृत्ति न्यूकाम्ब – एक व्यक्ति की मनोवृत्ति किसी वस्तु की ओर कार्य करने का सोचने का तथा अनुभव करने का उसका पूर्ण विन्यास है।

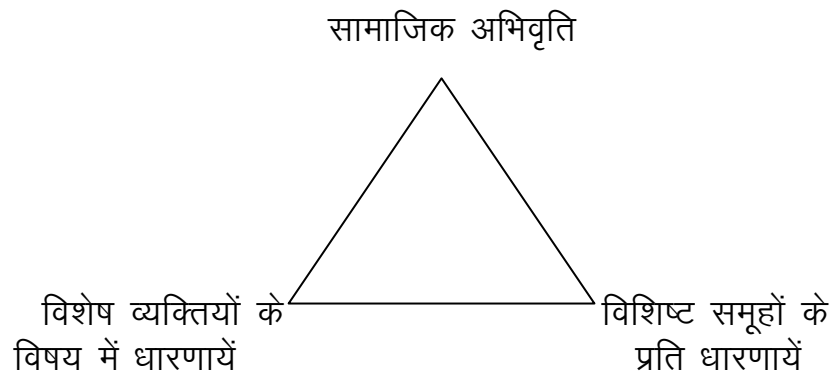
जेम्स ड्रेवर –मनोवृत्ति रुचि या उद्देश्य की एक स्थायी प्रवृत्ति है जिसमें एक विशेष प्रकार के अनुभव की आशा और एक उचित प्रतिक्रिया की तैयारी निहित होती है।

मनोवृत्ति की परिभाषा से स्पष्ट है—

1. अभिवृत्ति जन्मजात नहीं होती।
2. अभिवृत्ति में स्थायित्व होता है।
3. अभिवृत्ति का संबंध बाह्य वस्तुओं, विचारों तथा प्रतिमाओं से होता है।
4. अभिवृत्ति व्यवहार को दिशा प्रदान करती है।
5. अभिवृत्ति में प्रेरणात्मक तत्व होते हैं।
6. अभिवृत्ति संवेगों से सम्बन्धित होती है।
7. अभिवृत्ति का संबंध आवश्यकताओं और समस्याओं से होता है।
8. अभिवृत्ति की घटक विशेषताओं से, इनका भाव प्रमुख है।
9. अभिवृत्ति में संगति तथा अनुरूपता पाई जाती है।

1.6.2 अभिवृत्ति के प्रकार

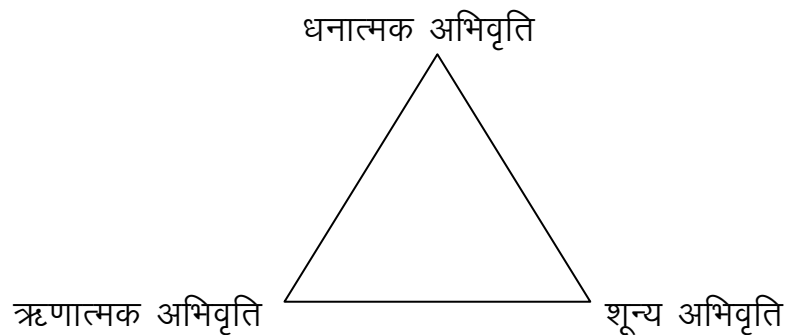
अभिवृत्ति को तीन भागों में बाँटा जाता है—



चित्र: 1 मनोवृत्ति के प्रकार

1. सामाजिक अभिवृत्ति— समाज के प्रमुख रिवाज तथा समूहों के विषय में विकसित धारणायें इसी मनोवृत्ति का परिणाम हैं।
2. विशेष व्यक्तियों के विषय में धारणायें — समाज के प्रमुख व्यक्तियों के प्रति विकसित धारणायें इसी अभिवृत्ति के कारण होती हैं
3. विशिष्ट समूहों के प्रति धारणायें— विशेष समूहों, समुदाय, जाति वर्ग, विद्यालय, खेल, टीम आदि के प्रति विकसित धारणायें इसी कोटि में आती हैं

1.6.3 अभिवृत्ति की प्रकृति—



चित्र: 2 अभिवृत्ति की प्रकृति

1. धनात्मक अभिवृत्ति— किसी भी सम्बंधित व्यक्ति घटना तथा समूह के प्रति सकारात्मक द्रष्टीकोण धनात्मक प्रकृति की अभिवृत्ति हैं।
2. ऋणात्मक अभिवृत्ति— इसमें व्यक्ति समूह तथा घटनाओं के प्रति ऋणात्मक द्रष्टीकोण पाया जाता है।
3. शून्य अभिवृत्ति—यह अभिवृत्ति न तो सकारात्मक होती है और न नकारात्मक। किसी भी प्रकार की कोई अभिवृत्ति किसी व्यक्ति, समूह या घटना के प्रति न होना शून्य मनोवृत्ति कहलाती है।

1.6.4 शिक्षक की भूमिका

बालक में किसी भी प्रकार की अभिवृत्ति विकसित करने की क्षमता उत्पन्न करने का दायित्व शिक्षक का है अभिवृत्ति के विकास के लिए शिक्षक इन विधियों का प्रयोग कर सकता है।

- सूचना तथा प्रचार
- सामाजिक अधिगम
- व्यक्तित्व
- प्रेरणात्मक कारक
- समूह प्रभाव
- आवश्यकताओं की संतुष्टि
- प्रत्यक्षीकरण कारक
- सांस्कृतिक कारक
- सम्पर्क
- प्रकार्यात्मक कारक

ये विधियाँ परिस्थिति तथा व्यक्ति की प्रकृति के अनुसार प्रयोग में लानी चाहिए। मनोवृत्ति में परिवर्तन की प्रक्रिया में तादात्मीकरण, अन्ताकरण तथा अनुपालन की अहम् भूमिका होती है।

1.7 अधिगम को प्रभावित करने वाले कारक

अधिगम एक प्रक्रिया है इस प्रक्रिया की सफलता केवल प्रभावशाली शिक्षण पर ही नहीं वरन् अनेक सामूहिक कारको पर निर्भर करती है। शिक्षार्थी, शिक्षक, पाठ्यवस्तु, अधिगम, व्यवस्था, वातावरण इत्यादि से सम्बन्धित अनेक कारक अधिगम की मात्रा स्वरूप एवं गति के निर्धारक के रूप में उत्तरदायी होते हैं। ये कारक मुख्य रूप से पाँच हैं।

- अ. शिक्षक से सम्बन्धित कारक
- ब. शिक्षार्थी से सम्बन्धित कारक
- स. पाठ्य-वस्तु से सम्बन्धित कारक
- द. अधिगम व्यवस्था से सम्बन्धित कारक
- ड. वातावरण से सम्बन्धित कारक

1.7.1 अ. शिक्षक से सम्बन्धित कारक

1. **विषय का ज्ञान**— अध्यापक को अपने विषय का पूर्ण ज्ञान है तो वह आत्मविश्वास के साथ छात्रों को नवीन ज्ञान देने में सक्षम होगा तथा उसका शिक्षण प्रभावी होगा।
2. **शिक्षक का व्यवहार** — अध्यापक के व्यवहार में सहानुभूति सहयोग, समानता शिक्षण कला में निपुणता, मृदुभाषी, संयत आदि गुण हैं तो छात्र कक्षा वातावरण में सहज रूप से सब कुछ सीख सकेगा।
3. **मनोविज्ञान का ज्ञान** — अध्यापक को बाल विकास प्रक्रिया, वंशानुक्रम, व्यक्तिगत विभेद, प्रेरणा सीखने के सिद्धान्त आदि का ज्ञान अतिआवश्यक है आधुनिक शिक्षा में मनोविज्ञान की महत्वपूर्ण भूमिका रही है।
4. **शिक्षण विधि**— प्रत्येक अध्यापक का पढ़ाने का तरीका भिन्न होता है शिक्षण विधि जितनी अधिक वैज्ञानिक एवं प्रभावशाली होगी उतनी सीखने की प्रक्रिया सरल एवं लाभप्रद होगी।
5. **व्यक्तिगत भेदों का ज्ञान**— अध्यापक को तीन प्रकार के छात्रों का सामना करना पड़ता है—मेधावी, सामान्य तथा पिछड़े हुए बालक इन्हीं के अनुरूप शिक्षण व्यवस्था करनी होती है व्यक्तिगत भेद छात्र को समझने में अध्यापक का सहयोग करते हैं।
6. **वैयक्तिक** — छात्र जाने अनजाने शिक्षक के व्यवहार से प्रभावित हो बहुत सी बातें सीख लेते हैं इस दृष्टि से एक अध्यापक को आत्मविश्वासी, दृढ़इच्छा शक्ति, कर्तव्यनिष्ठ निरोगी, श्रेष्ठ रुचियों एवं अभिरुचियों वाला होना चाहिए।
7. **बाल केन्द्रित शिक्षा** — आधुनिक युग में शिक्षक के लिए यह आवश्यक है कि वह जो भी ज्ञान छात्रों को प्रदान करे वह उसकी रुचियों, क्षमताओं एवं स्तर के अनुकूल होना चाहिए।
8. **समय—सारणी** — समय सारणी बनाते समय मौसम बालकों की योग्यता, रुचि एवं व्यक्तिगत विभेदों पर भी ध्यान दिया जाना चाहिए।
9. **पाठ्य सहभागी क्रियायें**— शिक्षा में मनोविज्ञान के योगदान के रूप में आज पाठ्यक्रम में अनेक महत्वपूर्ण सहभागी क्रियाओं को स्थान दिया जाता है जैसे वाद—विवाद, निबन्ध, लेख कहानी, कविता, अन्ताक्षरी, भ्रमण, छात्रसंघ, खेलकूद, अभिनय, संगीत आदि
10. **अनुशासन** — मनोविज्ञानिक परीक्षण यह सिद्ध करते हैं छात्र अपराध करने पर दण्ड से डरता नहीं इसका यह अर्थ नहीं कि छात्र को मनमानी करने दी जाए उसे अपराध के अनुकूल दण्ड दिया जाए।

1.7.2 ब. शिक्षार्थी से सम्बन्धित कारक

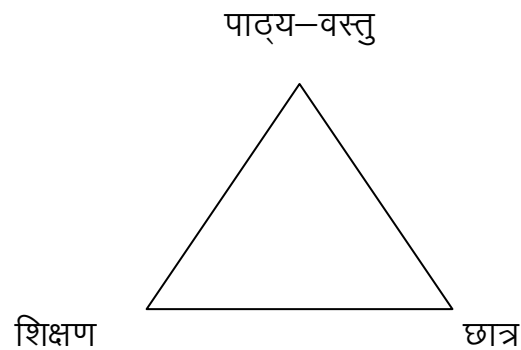
1. **बालक** — बालक शिक्षण अधिगम प्रक्रिया का आधार है इसलिए उसके आभाव में अधिगम की कल्पना नहीं की जा सकती।
2. **सीखने की इच्छा**— बालकों में सीखने के प्रति जिज्ञासा उत्पन्न की जाए जिससे बाल कठिन तथ्यों को भी आसानी से समझ सके।
3. **शैक्षिक पृष्ठभूमि**— छात्र की एक विषय में शैक्षिक योग्यता सामान्य से अधिक है तो छात्र उस विषय में नया ज्ञान सुगमता से सीख लेगा।
4. **शारीरिक व मानसिक स्वास्थ्य**— सीखने से पहले बालक का स्वास्थ्य रहना जरूरी क्योंकि किसी भी प्रकार की मानसिक विकृति, शारीरिक रुग्णता तथा मानसिक तनाव का प्रत्यक्ष प्रभाव बालको के अधिगम पर प्रतिकूल पड़ता है। अस्वस्थ बालक शीघ्र थक जाते हैं।
5. **परिपक्वता**— बहुत सी चीजें बालक अभी सीख पाता है। जब उसमें परिपक्वता आ जाती है चाहें हम उसे कितना भी प्रशिक्षण दें।
6. **अभिप्रेरणा**— अभिप्रेरणा उत्पन्न करने के लिए यह आवश्यक है कि बालक को उसका लक्ष्य स्पष्ट कर दिया जाये किसी नये कार्य को सीखने के लिए प्रेरित नहीं किया जाता तों वह उस क्रिया में रुचि नहीं लेगा।
7. **सीखने वाले की अभिवृत्ति** — सीखने वाले की किसी कार्य की नकारात्मक या सकारात्मक अभिवृत्ति उस कार्य की प्रगति निर्भर करती हैं।
8. **सीखने का समय तथा अवधि**— छात्र किसी कार्य को देर तक करता है तो उसे थकान हो जाती है थकान होने से अधिगम प्रक्रिया में शिथिलता आ जाती है।
9. **बुद्धि** — बालक की तीव्र या मन्द बुद्धि किसी कार्य को सीखने में सरलता या बाधा उत्पन्न करना है।
10. **अधिगम प्रक्रिया** —यह सच है कि बालक किसी भी कार्य को अपने ढंग से सीखता है चाहे प्रक्रिया किसी भी ढंग से क्यों न सम्पादित की जाये।

1.7.3 स. पाठ्य वस्तु से सम्बन्धित कारक

1. **विषय** — वस्तु की प्रकृति — निर्भर करता है कि सिखायी जाने वाली वस्तु सरल है या कठिन तो बालक को सीखने में सरलता या कठिनाई का अनुभव होगा।
2. **विषय वस्तु का आकार**— विस्तृत विषय वस्तु से वह शीघ्र ही ऊब जाता है व छोटे पाठों को वह जल्दी ही ग्रहण कर लेता है।
3. **विषय वस्तु का क्रम** — विषय वस्तु को छात्रों के समक्ष प्रस्तुत करने का क्रम सीखने की प्रक्रिया को पर्याप्त रूप से प्रभावित करता है अर्थात् क्रम 'सरल से कठिन की ओर होना चाहिए'।

4. **उदाहरण प्रस्तुतीकरण** – पढ़ाते समय शिक्षकों को बालक के दैनिक जीवन से सम्बन्धित उदाहरणों का प्रयोग करने से प्रत्ययों का स्पष्टीकरण आसानी से हो जाता है।
5. **भाषा-शैली** – विषय वस्तु को सरल भाषा में बालकों के समक्ष प्रस्तुत किया जाए तो वह सरलता से उसे सीख लेता है।
6. **दृश्य-श्रव्य सामग्री**– कठिन से कठिन पाठ्यवस्तु को भी दृश्य श्रव्य सामग्री के उपयोग से सरल व सुगम बनाया जा सकता है।
7. **रुचिकर विषय वस्तु**– शिक्षक को अपनी सूझ-बूझ से विषय वस्तु को रोचक बनाने के प्रयास करना चाहिए जिससे बालक खूब मन लगाकर सीखते हैं।
8. **विषय वस्तु की उद्देश्यपूर्णता** – विषय वस्तु बालकों को पढ़ाने से पूर्व अध्यापक को उससे जुड़े उद्देश्यों एवं उपयोगिता को स्पष्ट करना चाहिए क्योंकि उपयोगी वस्तु बालक जल्दी सीखता है।
9. **विभिन्न विषयों का कठिनाई स्तर** – प्रत्येक विषय की प्रकृति अनूठी होती है उसी आधार पर बालक उसमें रुचि व अरुचि दिखाता है व उसी आधार पर सीखता है।

1.7.4 द. अधिगम –व्यवस्था से सम्बन्धित कारक– :-



चित्र: 3 शिक्षण अधिगम प्रक्रिया

1. **सम्पूर्ण बनाम खण्ड विधि** – इसकी मुख्य विशेषता यह है कि इससे विद्यार्थी अपनी स्मरण शक्ति बढ़ा सकता है।
2. **उप-विषय बनाम सकेन्द्रीय विधि**– बालक की मानसिक स्तर और आयु के अनुसार उपविषय पढ़ाये जाते हैं व उसी कक्षा में पूर्ण कर दिए जाते हैं। सकेन्द्रीय विधि में उपविषय को उसी कक्षा में समाप्त नहीं किए जाते बल्कि आयु व स्तर बढ़ने के अनुसार उस विषय को पुनः पढ़ाया जाता है।

3. **संकलित बनाम वितरित विधि**— संकलित विधि में सम्पूर्ण विषय वस्तु को एक ही सत्र में समाप्त कर दिए जाता है। जबकि वितरित विधि में विषय वस्तु अंतराल देकर समाप्त की जाती है।
4. **आयोजित बनाम प्रासांगिक विधि**— इस विधि का सिद्धान्त यह है कि ज्ञान एक ईकाई है इसके भिन्न-भिन्न अंग नहीं हैं ज्ञान ईकाई के रूप में दिया जाना चाहिए अतः विद्यार्थी ज्ञान के सभी अंगों से परिचित हो सकेगा।
5. **सक्रिय बनाम निष्क्रिय विधि**— सक्रिय विधि के अंतर्गत विद्यार्थी पाठ को जोर-जोर से या धीरे-धीरे बोल कर याद करता है जबकि निष्क्रिय विधि के अंतर्गत विद्यार्थी पाठ को मन ही मन पढ़कर याद करता है दोनों विधि अपने आप में महत्वपूर्ण हैं विद्यार्थी अपनी अभिवृत्ति के अनुरूप नवीन ज्ञान को सीखने में इनमें से किसी एक का चयन करता है।

1.7.5 इ. वातावरण से सम्बन्धित कारक –

1. **वंशानुक्रम** – बालक में अस्सी प्रतिशत योग्यताएं एवं क्षमतायें उसके वंशानुक्रम की ही देन हैं। रॉस "बालक जो कुछ भी है ओर जिस रूप में विकसित होता है, वह वंशक्रम की ही देन है। व्यक्ति का जीवन सुखमय या दुःखमय होना भी उसके वंशक्रम से प्राप्त गुणों पर निर्भर करता है।
2. **सामाजिक वंशक्रम का ज्ञान** – बालक पूर्वजों के आदर्शों से बहुत कुछ सीखता है तथा उनके चरित्र को अपना आदर्श मानकर तदनुसार कार्य करके महान बनने का प्रयास करता है।
3. **वातावरण का प्रभाव** – बालक के लिए वातावरण का उचित होना वंशानुक्रम के विकास के लिए एक अनिवार्य शर्त है। अतः व्यक्ति वंशानुक्रम की आधारभूत मान्यताओं को विकसित करने के लिए वातावरण को उपयोगी बनाने में विश्वास करता है।
4. **व्यक्तित्व का विकास**— वंशानुक्रम तथा वातावरण के ज्ञान से व्यक्ति मानवीय मूल्यों के विकास में रुचि लेने लगता है। वंशानुक्रम के प्रति आस्था व्यक्ति के सांवेगिक तथा सामाजिक विकास में विशेष योग देती हैं तथा सामाजिक व्यक्तित्व समाज के लिए उपयोगी सिद्ध होता है।
5. **शिक्षा के अनौपचारिक साधन** – बालक शिक्षा दो प्रकार के साधनों द्वारा शिक्षा प्राप्त करता है औपचारिक तथा अनौपचारिक दोनों ही प्रकार के साधनों का बालक के अधिगम पर गहन प्रभाव पड़ता है।
6. **परिवार का वातावरण** – परिवार के वातावरण का प्रभाव बच्चों की अधिगम प्रक्रिया पर पड़ता है यदि परिवार में कलह होती है तो बालक के मस्तिष्क पर बहुत बुरा प्रभाव पड़ता है वो उदास खिन्न रहने लगते हैं।

7. **कक्षा का भौतिक वातावरण** – कक्षा में छात्रों को भौतिक वातावरण जैसे—प्रकाश, वायु, कोलाहल आदि की समुचित व्यवस्था नहीं मिलती तो ऐसी स्थिति में छात्रों का मन अधिगम से उचाट हो जाता है
8. **मनोवैज्ञानिक वातावरण**— छात्रों में एक दुसरे के प्रति सहयोग और सहानुभूति की भावना है उनमें आपस में मधुर सम्बन्ध है तो सीखने की प्रक्रिया सूचारु रूप से आगे बढ़ती है।
9. **सामाजिक एवं सांस्कृतिक वातावरण** – सांस्कृतिक वातावरण वह है जो व्यक्ति द्वारा निर्मित या प्रभावित उन समस्त नियमों, विचारों, विश्वासों एवं भौतिक वस्तुओं की पूर्णता से है जो जीवन को चारों ओर से घेरे रहते हैं सामाजिक वातावरण वह जो रीतिरिवाज मान्यताएँ, आदर्श मूल्य एवं स्वयं व्यक्ति की समाज में स्थिति आती है जो व्यक्ति के अधिगम को प्रभावित करती हैं।
10. **सम्पूर्ण परिस्थिति** – विद्यालय का सम्पूर्ण व्यवहार परिवेश इस प्रकार से निर्मित किया जाता है जो विद्यार्थी को पूर्ण संतुष्टि प्रदान करे व शैक्षिक उपलब्धि स्तर को ऊँचा उठाने के साथ-साथ उसके मनोबल को बनाये रखे। सम्पूर्ण परिस्थिति का संतोषप्रद होना अधिगम की अनिवार्य शर्त है।

अपनी प्रगति की जाँच कीजिए क्रिया अभ्यास

सत्य / असत्य प्रश्न

1. शिक्षण अधिगम पर आधारित होता है।
2. शिक्षण अधिगम परिस्थितियाँ को उत्पन्न करता है।
3. शिक्षण अधिगम क्रियायें साथ-साथ सम्पादित होती हैं।

रिक्त स्थान भरो—

1. शिक्षण तथा अधिगम में होता है।
2. अधिगम पर आधारित होता है।
3. शिक्षण अधिनियमों कोसमिति ने दिए।

- “सीखना व्यवहार में उत्तुत्तर सामन्जस्य की प्रक्रिया है” चार्ल्स ई. स्किनर
- “सीखना व्यवहार में परिवर्तन को कहा जाता है।
- सीखने का अर्थ वातावरण के प्रति उपयुक्त प्रतिक्रिया को अपनाने की प्रक्रिया है।
- सीखने की परिभाषा देते हुए क्रो व क्रो ने कहा “सीखना आदतों, ज्ञान, और अभिवृत्तियों का अर्जन है।”
- अधिगम प्रक्रिया द्वारा छात्र नए अनुभवों, व्यवहारों, तथ्यों, प्रत्ययों तथा सिद्धान्तों को अर्जित करता है।
- अधिगम को प्रभावित करने वाले मुख्य कारक पाँच हैं—
 1. शिक्षक से सम्बंधित कारक
 2. शिक्षार्थी से सम्बंधित कारक
 3. पाठ्य-वस्तु से सम्बंधित कारक
 4. अधिगम व्यवस्था से सम्बंधित कारक
 5. वातावरण से सम्बंधित कारक
- आवश्यकताएँ, इच्छाएँ, आकाक्षाएँ सीखने की प्रक्रिया को प्रभावित करती हैं।
- अभिवृत्ति सीखने की प्रक्रिया को प्रभावित करती है।
- अभिवृत्ति सीखने के लिए महात्वपूर्ण है।
- अभिवृत्ति सीखने के लिए महात्वपूर्ण है उदा. मोटर ड्राइविंग हम तभी जल्दी व अच्छे से सीख सकते हैं अगर हमारे अंदर इच्छा शक्ति है।

1.9 अपनी प्रगति की जाँच कीजिए

अ. दीर्घ उत्तर प्रश्न

1. अधिगम को प्रभावित करने वाले विभिन्न कारकों का संक्षेप में वर्णन कीजिए?
2. अधिगम से आप क्या समझाते हैं स्पष्ट कीजिए?
3. अधिगम की प्रकृति को संक्षिप्त में समझाएं?
4. अभिवृत्ति सीखने की प्रक्रिया को प्रभावित करती है। स्पष्ट कीजिए ?

ब. लघु-उत्तर प्रश्न

1. अधिगम को प्रभावित करने वाले शिक्षक से सम्बंधित कारकों का उल्लेख कीजिए?
2. अधिगम प्रक्रिया को संक्षेप में समझाइए ?
3. सीखने के शारीरिक कारक बताइए ?
4. सीखने के पर्यावरणीय कारक कौन-कौन से हैं ?

स. अति लघु उत्तरीय प्रश्न

1. अधिगम की एक परिभाषा लिखिए ?
2. अधिगम को प्रभावित करने वाले कारकों के नाम लिखिए ?
3. अधिगम को प्रभावशाली बनाने के लिए किन-किन बातों का ध्यान रखेंगे ?
4. मनोवृत्ति विकसित करने वाली विधियाँ लिखें ?

स्पष्टीकरण के बिन्दु

1. इस ईकाई के अध्ययन के बाद आप कुछ बिन्दुओं पर और अधिक चर्चा करना चाहेंगे तथा कुछ पर स्पष्टीकरण।

1.10 संदर्भ सूची

- भटनागर, ए.बी., भटनागर मीनाक्षी, भटनागर अनुराग, (2006), शिक्षण अधिगम प्रक्रिया का मनोविज्ञान, आर लाल बुक डिपो सूर्या पब्लिकेशन।
- जैन, नरेन्द्र प्रकाश, बनारसीदास, मोतीलाल (1997) उच्चतर सामान्य मनोविज्ञान, बंगाली रोड, नई दिल्ली।
- शर्मा, आर.ए. (2005) छात्र का विकास एवं शिक्षण अधिगम प्रक्रिया, सूर्या पब्लिकेशन मेरठ 25001
- मंगल, एस.के., पाठक पी.डी. (2010) अधिगमकर्ता का विकास और शिक्षण अधिगम प्रक्रिया, अग्रवाल पब्लिकेशन आगरा-2
- माथुर, एस.एस. शिक्षा मनोविज्ञान, विनोद पुस्तक मंदिर हास्पिटल रोड, आगरा -2
- सिंह, अरुण कुमार (1997) उच्चतर सामान्य मनोविज्ञान, मोतीलाल बनारसीदास।